ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 83-84
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

स्वछंद सोशल मीडियाः खतरें, कारण एवं निदान

प्रीति जयसवाल
रिसर्च स्कालर– डी.डी.यू. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-17.10.2023, Revised-23.10.2023, Accepted-28.10.2023 E-mail: jaispreeti1083@gmail.com

सारांशः ***विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था की आधारशिला है या यूं कहें कि किसी भी राष्ट्र के उन्नयन एवं परिवर्धन हेतु उसके नागरिकों व प्रजाजनों की सहभागिता आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य भी है जिसके लिए वाक स्वतंत्रता एक महत्वपूर्ण पहलू है। वैसे भी मीडिया को लोकतंत्र का चौथा आधार स्तंभ कहा जाता है।***

कुंजीभूत शब्द– विचार अभिव्य, प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था, सहभागिता, सर्वग्राही, अक्षुण्णता, आधारशिला, सोशल मीडिया ।

वर्तमान परिदृश्य में जबकि संपूर्ण विश्व एक वैश्विक गांव में परिवर्तित हो चुका है। कंप्यूटर, मोबाइलफोन, लैपटॉप और टैबलेट पर उंगलियां फिराते ही सब कुछ घूम जाता है। ऐसे में प्रश्न यह है कि यह स्थिति हमें कहां पहुंचा रही? एक उज्जवल भविष्य की ओर अथवा..?

आम तौर पर मीडिया से अभिप्राय उन माध्यमों से है जिनके द्वारा कोई बात तथ्य या संदेश जनसाधारण तक दृश्यमय, श्रव्य, मौखिक या लिखित रूप में पहुंचाया जाता है। सोशल मीडिया गैर प्रसारण मीडिया के अंतर्गत आता है। वर्तमान समय में इंस्टाग्राम, ट्विटर, फेसबुक इत्यादि प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स हैं।

सोशल मीडिया के इन प्लेटफॉर्म्स पर किसी भी घटना या वस्तुस्थिति को उसकी अक्षुण्णता के साथ संप्रेषित करने की क्षमता होती है, लेकिन यहाँ यह भी स्मरण रहे कि सोशल मीडिया में घटना की यथार्थता की अक्षुण्णता को विकृत व विखंडित करके संप्रेषित करने की भी क्षमता है, क्योंकि यह एक संवेदनशील अति रफ्तारी और बहुस्तरीय प्रभावोंत्पादक माध्यम है। यह एक साथ चंद पलों में किसी की भी विरोधाभासी छवियाँ गढ़ता और तोड़ता भी है। यह संवेदनशील भी बनाता है और संवेदना शून्य भी। यह उपभोक्ता बनाता है और हस्तक्षेपकर्ता भी, इसमें यथार्थ को भ्रम और भ्रम को यथार्थ के रूप में चित्रित करने की अद्भुत कला है।

सोशल मीडिया का पिछले कुछ समय में जिस तरह सर्वव्यापी और सर्वग्राही विस्तार हुआ है उससे समाज व मानस स्तंभित है। सर्वव्यापी शब्द से एक तरफ प्रसन्नता के भाव उपजेंगे उसी तरह सर्वग्राही शब्द पर चिंता भी उठना स्वाभाविक है।

स्वच्छंदता स्वतंत्रता का अमर्यादित रूप है मीडिया की स्वतंत्रता ने जिस तरह अमर्यादित स्वरूप ग्रहण किया है वह हमारे लिए चिंतनशील विषय है। आज इस बात से हम सभी सहमत हैं की इधर कुछ वर्षों में सोशल मीडिया ने हमारे जीवन को काफी हद तक प्रभावित किया है। हमारा चिंतन, हमारा रहन–सहन, हमारे विचार, हमारी संस्कृति यहाँ तक कि हमारी निहायत व्यक्तिगत जिंदगी को भी सोशल मीडिया ने बदलने की भरपूर कोशिश की है तथा काफी हद तक इसमें सफल भी रहा है। ज्ञान का प्रसार करना और समाज में को मनोरंजन प्रदान करना सोशल मीडिया के दायित्व में शुमार हुआ करता था जबकि वर्तमान स्थिति सूचनाओं और समाचारों के सम्प्रेषण तक सीमित नहीं है। सोशल मीडिया आज भागीदार भी हैं और कारक भी। प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वंद्विता के इस दौर में उसमें भटकने की संभावना पर्याप्त नजर आती है। मीडिया सिर्फ ज्ञान के प्रसार तक ही सीमित नहीं है, बल्कि ज्ञान की खोज और ज्ञान के भंडार के रूप में भी हमारे समक्ष उपस्थिति दर्ज करा चुका है, लेकिन हर सिक्के के दो पहलू होते हैं सोशल मीडिया तमाम अच्छी चीजों के साथ कुछ ऐसी चीजों को भी जन्मदात्री है जो हमारे लिए मनन करने के योग्य हैं। ऐसी ही नकारात्मक पहलुओं पर हमने ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया है :–

सोशल मीडिया के खतरें–

अनैतिक प्रयोग : अभिव्यक्ति की आजादी के लिए सोशल मीडिया ने जो अवसर नागरिकों को सुलभ कराये हैं लगभग एक दशक पूर्व यह अकल्पनीय ही था। वस्तुतः इस मंच के सकारात्मक प्रयोग से समाज में बदलाव की बयार लाई जा सकती है किंतु मनन योग्य बात यह है कि वर्तमान समय में सोशल मीडिया अपने आलोचनाओं के लिए चर्चा का विषय बना हुआ है। सोशल मीडिया का दुरुपयोग कई रूपों में किया जा रहा है – इसके जरिए न केवल सामाजिक व धार्मिक उन्माद फैलाने का कार्य किया जा रहा है बल्कि राजनीतिक स्वार्थ सिद्धि हेतु भी गलत सूचनाएँ वायरल की जा रही हैं। इससे समाज में हिंसा की घटनाएं बहुत बढ़ गई हैं।

निजता का हनन : जीने का अधिकार निजता के अधिकार और स्वतंत्रता के अधिकार को अलग–अलग करके नहीं बल्कि समग्र रूप में देखा जाना चाहिए। न्यायालय के शब्दों में निजता मनुष्य के गरिमापूर्ण अस्तित्व का अभिन्न अंग है, जिसे संविधान में गढ़ा ही नहीं, बल्कि मानता भी दी है।

वर्तमान समय में सोशल मीडिया ने व्यक्ति की निजता का मखौल उड़ा कर रख दिया है। व्यक्ति का व्यक्तिगत तो कुछ रह ही नहीं गया है, सब सार्वजनिक है। सोशल साइट्स के प्राइवेसी का दुरुपयोग कई बार हमारे समक्ष विकराल रूप में प्रकट हुआ। इस तरह व्यक्तिगत जानकारी के सर्वाधिक प्रचलित दुरुपयोग का उदाहरण 2016 का अमेरिकी चुनाव भी रहा, जिसमें जानकारी का प्रयोग एक पक्ष के लिए किया गया।

अश्लील सामग्री : नैतिकता का जिस प्रकार ह्रास हो रहा है, आए दिन होने वाली दुष्कर्म जैसे जघन्य अपराधों के तह में जाने पर पता चलता है कि इंटरनेट पर उपलब्ध अश्लील सामग्री का सबसे खतरनाक प्रभाव पड़ा है। मुफ्त में उपलब्ध अश्लील सामग्री पर रोक लगाने की चर्चा होनी चाहिए। मुफ्त में उपलब्ध सामग्री से किशोर और युवा विकृत मानसिकता के शिकार होकर दुष्कर्म जैसे

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

जघन्य कुकर्म को अंजाम दे रहे हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति औसतन 75 दिन का समय 1 साल में सोशल साइट पर बिता रहा है।

संवेदना शून्यता– लगभग एक दशक पूर्व जब इंटरनेट और सोशल मीडिया एक क्रांति के रूप में आया, तो बिछड़ें लोग मिलने लगे, दूरियां सिमटने लगी, देश–विदेश की दूरी लगभग खत्म ही हो गई। समय बीता और परिवर्तन तो प्रकृति का शाश्वत नियम है। जो दूरियां सिमटी थी वह आभासी रही, आज व्यक्ति अपने आसपास के लोगों को समय नहीं दे पा रहा, लेकिन सोशल मीडिया पर घण्टों हजारों आभासी मित्रों व समूहों के बीच सक्रिय रह रहा है। इन सबके बीच मनुष्य कितना संवेदनहीन होता जा रहा, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि डूबते हुए व्यक्ति को बचाने की बजाय उसका वीडियो क्लिप बनाना अधिक प्रासंगिक लग रहा।

साइबर अपराध– सोशल मीडिया के अनेक प्लेटफॉर्म्स ऐसे मकड़जाल की तरह व्यक्ति को जकड़ रहा, जिसका पता धोखाधड़ी होने के बाद चल रहा है। निजी जानकारियां हासिल कर व्यक्ति को ब्लैकमेल कड़ते हुए अपराध की दुनिया मे पदार्पण कराया जा रहा। इन सबके अतिरिक्त एक क्लिक करते ही कंगाल होने की खबरें हम आए दिन ही सुनते रहते हैं।

धूम्रपान जैसी है यह लत– आज के भागदौड़ भरी जिंदगी में बजी आज का युवा वर्ग (16–35) सप्ताहके 28 घण्टें फोन पर बिता रहे है।

कहते हैं की आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है तथा किसी चीज की अति बहुत बुरी होती है। इंटरनेट तथा इससे जुड़ें सभी प्लेटफॉर्म्स अर्थात सोशल मीडिया व्यक्ति की आवश्यकता की वजह से अस्तित्व में आए तथा संसार को इसके अनेक अच्छें व सकारात्मक परिणाम दिए। संचार के इस सर्वाधिक बड़े साधन की आज बेतहाशा आलोचना की जा रही है, लेकिन हमें समझना होगा कि किसी भी वस्तु का आविष्कार बुरा नहीं होता। बंदूक का उपयोग उसके उपयोगकर्ता पर निर्भर करता है। हम इस बात से मुकर नहीं सकते, कि आज सोशल मीडिया दैनिक जीवन की कितनी बड़ी आवश्यकता है। जरूर बस इस बात की है कि इंटरनेट पर उपलब्ध अनेक सोशल साइट्स इत्यादि का उपयोग हम करें ना कि यह साइट्स हमारा। यह हमारे विवेक पर निर्भर करता है कि हम इसका प्रयोग मानव जीवन व समाज को बेहतर करने के लिए करें अथवा खुद इसका शिकार बन समाज को, आने वाली पीढ़ी को कोढ़ से ग्रसित करें। निर्णय हमें ही लेना है अन्यथा देव और दानव में कुछ शब्दों का हेर–फेर मात्र होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. S.Shabnoor,S.Tajindar, Social media it's impact with positive and negative aspects IJCATR, volume 5.
2. American Economic and Social Review 9(1)2022. Source - Field survey.
3. Received from http://tojqih.net/journals/tijden/articles/v08i02/v08i02-3 pdf.
4. Abhimanyu Shankhdhar,JIMS/ SOCIAL MEDIA AND BUSINESS.

*****